पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

आहत प्रकृति

अब सिर्फ सुमेरु नहीं
हथेलियों पर
संसार समेटने के
फिराक में है आदमी,
काया पर कीमती परिधान
और झूलते चमकीले गहने
उसकी मोटी लालसाओं के
प्रतीक हैं।
उसके भटकने से
आहत प्रकृति भी अब
जल्दी मुरझाने लगी है।
बीजों का धरती पर पनपना भी
कुछ कम हुआ है।
जहरीले धुओं के बादलों में
मृत्यु का हँसना
और
जीवन की कशमकश,
जैसे मुत्यु खुद हारकर
जीवन को जीता देना
चाहती हो,
जैसे उम्मीदें अभी भी
अंधेरों में उजाला नहीं
बल्कि उजाले में अँधेरा
तलाशती हों,
जैसे नजर
उजियाली चांदनी में
तारों को नहीं
बल्कि काले बादलों को
ढूँढती हो,
पर तब क्या हो,
जब साहस के सपनों का
संसार उंगलियों पर
सिमट आये
और ब्रह्माण्ड के
किसी बिंदु पर
निराश दम तोड़ दे।

मत रूठो मेरी कविता

मत रूठो मेरी कविता
न जाओ तुम मुझसे दूर
जिन्दगी के आरोह-अवरोह में
दादरा और रूपक के ताल पर झूमते
हर वक्त श्रद्धा के अबीर अक्षत लिए
अन्तर्मन से...
तुम्हारी ही आराधना में
लीन थी अब तक
मेरे बगिया की छोटी छोटी कोंपलें
उनके फूल बनकर
सूखने की यात्रा को
तुम्हारे ही माध्यम से
पुनर्जीवित करने की लालसा है
अपनी साधना के उपकरणों से
तुम्हे और सुन्दर बनाने की
असीम इच्छा है
अब
सुनो,
जीवन के व्यस्त वाहन में चढ़कर
मत भागो मुझसे,
समय पर सवार
आकाशीय वृत्ति बन
बरसो मुझपर
पर...
मत रूठो
करीब आओ
मेरीओर
मेरी कविता.....।

संपर्क सूत्र :
नेपाली समाचार वाचिका
आकाशवाणी, गांतोक